महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)
Accredited with 'A' Grade by NAAC

हिंदी आंचलिक भाषाओं का समुच्चय है : प्रो. हनुमानप्रसाद शुक्ल

"एमगिरी में आंचलिक भाषाएँ एवं हिंदी विषय पर कार्यशाला"

वर्धा दि. 27 मार्च 2015: आंचलिक भाषाएँ एवं हिंदी एक दूसरे के पूरक है| हिंदी और आंचलिक भाषाएँ दो नहीं हैं, जितने भौगोलिक क्षेत्र हैं उतनी हीं भाषाएँ हैं किंतु आंचलिक भाषाओं का साझा रूप हिंदी है| भाषाओं के बीच संबंध ठीक उसी प्रकार है जिस प्रकार हमारे शरीर के रक्त प्रवाह में विविध धमनियों का है| हम जिस भौगोलिक क्षेत्र में रहते हैं वहाँ के भाषा से हमें प्रेम है लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि दूसरे भौगोलिक क्षेत्र के भाषा से नफरत करते हैं| 12वीं शताब्दी में जब संस्कृत का सूर्यास्त हो रहा था तब मलयालम ने 70 प्रतिशत शब्दों को अपनी भाषा में अपनाया| हम ऐसा कह सकते हैं कि हिंदी सभी भाषाओं का समुच्चय है| उक्त प्रतिपादन महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में भाषा विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. हनुमानप्रसाद शुक्ल ने

व्यक्त किए। वे महात्मा गांधी ग्रामीण औद्योगीकरण संस्थान (एमगिरि), वर्धा में 26 मार्च को "'आंचलिक भाषाएँ एवं हिंदी' विषय पर आयोजित कार्यशाला में बतौर मुख्य वक्ता बोल रहे थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता एमगिरी के निदेशक डॉ. प्रफुल्ल बी. काले ने की|

प्रो. शुक्ल ने कहा कि दुनिया में लगभग 70 प्रतिशत लोगों को अंग्रेजी नहीं आती, इसकी रक्त ही दूषित है उसमें आत्मीयता का संचार हुआ ही नहीं| ऐसा माना जा सकता है की हिंदी एक लिमिटेड कंपनी है तथा आंचलिक भाषाएँ उसका शेयर है| जो आंचलिक भाषाएं हिंदी में जितना शेयर बढाएंगी वह हिंदी के लिए अधिक योगदान होगा| आंचलिक भाषाओं में कोई विरोध नहीं है, आंचलिक भाषाएँ ही हिंदी है| हम क्रांति व दबाव देकर हिंदी को विकसित नहीं कर सकते बल्कि

आंचलिक भाषाओं के प्रेमी हीं हिंदी में ज्यादा से ज्यादा योगदान देकर और अपने दैनिक दिनचर्या में अपनाएँ तभी हम हिंदी का और विकास कर सकते हैं| हिंदी इस देश की भाषा होगी तभी देश का विकास होगा|

एमगिरी के हिंदी अधिकारी एवं रसायनिक ग्रामोद्योग विभाग के उपनिदेशक डॉ. मनोरंजन पटनायक ने कार्यक्रम की संक्षिप्त रूप-रेखा प्रस्तुत की| संस्थान के निदेशक डॉ. पी. बी. काले ने कहा कि एमगिरी में आविष्कार व खोज को हिंदी विश्वविद्यालय में प्रदर्शनी के रूप में लगाया जाए ताकि छात्रों के कौशल विकास में मदद हो सकें। उन्होंने हिंदी विश्वविद्यालय के साथ मिलकर काम करने का भरोसा भी जताया। कार्यक्रम का संचालन तथा धन्यवाद ज्ञापन हिंदी विभाग की अपर्णा सिंह ने किया| कार्यक्रम में एमगिरी के अधिकारी, कर्मचारी एवं हिंदी विश्वविद्यालय के आचार्य व शोधार्थी भी उपस्थित थे |